

DPN 6104

Title : वलिदान विधि VALIDĀNA VIDHI

Run. No. 6795

Cat. No. 102

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 10.5

Folios 5
(10-14)
Chapt. / act /

Lines (in a page) 9/10

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

प्रशुप्रतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Prasūpātī mān Pahmāy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

विधाना विहिता यूयं वलित्वन दिवौकसां ॥ तस्माद् य उपच्छामि शिवायै भवतो
वरिन् ॥

गलं ॥ त्वत्कृपादिभ्यां गालिगस्तु ॥ लिप्ताद्यकर्मणि ॥ मया दद्यादिति वदितं ॥ मम विद्या मम चार्यं मया दद्यादिति वदितं ॥ मम विद्या मम चार्यं मया दद्यादिति वदितं ॥
 अथान्यथायावदक यशूनामनूयत ॥ विना वसुंकासर्वं वदितं ॥ विना वसुंकासर्वं वदितं ॥ विना वसुंकासर्वं वदितं ॥ विना वसुंकासर्वं वदितं ॥
 दद्युययक्रामिनिवायेरुवतावविन ॥ स्वकर्मरुलयाकेनयानिभतायुमागत ॥ दद्यायार्तिमूल्यायममचारा किर्तनं ॥ गः
 कथं दत्तं लोकात् ॥ सर्वं नयि सुना सुने ॥ त्विच्छथयून नैव नित्यं ॥ नो कदाचन ॥ मनुजं ज्ञात्वा सुदुर्लभं कुर्यादिति ॥ गः
 धं सुनालय ॥ मृगमत्स्यं गन्धानामन्यथा मयि जनिता ॥ न तमस्मादयं निरुद्धा ज्ञाता ज्ञातस्यैव हि ॥ का भवत्यनेन ॥ आवमि
 सामन्यत्वेन सिद्धया ॥ याति श्रेयादयाय ॥ सुविस्व ॥ यनिष्ठिर्ग ॥ अथैव ॥ या न वृयासि यविग ॥ सर्वकर्म सुका गत्वा
 वलित्वेन नमस्रु आदय किर्त ॥ यधमा मितना दवे नूतिषं वलित्वेन ॥ कालिका वलित्वेन न दाने दाना यद्विना गत ॥ दद्यात्ता वलित्वः
 याय क्का गत्वा नमो नमः ॥ यद्वा ॥ यधमा मितना दवे नूतिषं वलित्वेन ॥ कालिका वलित्वेन न दाने दाना यद्विना गत ॥ दद्यात्ता वलित्वः
 त्वत्कृपादिभ्यां गालिगस्तु ॥ लिप्ताद्यकर्मणि ॥ मया दद्यादिति वदितं ॥ मम विद्या मम चार्यं मया दद्यादिति वदितं ॥ मम विद्या मम चार्यं मया दद्यादिति वदितं ॥
 दद्यायार्तिमूल्यायममचारा किर्तनं ॥ गः
 कथं दत्तं लोकात् ॥ सर्वं नयि सुना सुने ॥ त्विच्छथयून नैव नित्यं ॥ नो कदाचन ॥ मनुजं ज्ञात्वा सुदुर्लभं कुर्यादिति ॥ गः
 धं सुनालय ॥ मृगमत्स्यं गन्धानामन्यथा मयि जनिता ॥ न तमस्मादयं निरुद्धा ज्ञाता ज्ञातस्यैव हि ॥ का भवत्यनेन ॥ आवमि
 सामन्यत्वेन सिद्धया ॥ याति श्रेयादयाय ॥ सुविस्व ॥ यनिष्ठिर्ग ॥ अथैव ॥ या न वृयासि यविग ॥ सर्वकर्म सुका गत्वा
 वलित्वेन नमस्रु आदय किर्त ॥ यधमा मितना दवे नूतिषं वलित्वेन ॥ कालिका वलित्वेन न दाने दाना यद्विना गत ॥ दद्यात्ता वलित्वः
 याय क्का गत्वा नमो नमः ॥ यद्वा ॥ यधमा मितना दवे नूतिषं वलित्वेन ॥ कालिका वलित्वेन न दाने दाना यद्विना गत ॥ दद्यात्ता वलित्वः

यथाद्विषयः ॥ कल्पान्तं विप्लवान् लोमान् नानादिद्विषयान् ॥ कात्यायन्यादिशक्तिः सती मयाधिकारि
 वा ॥ दत्ताचार्यं प्रतिपद्यते गनीयायाश्चोक्तिकं ॥ दवीलोकं वज्रक्रियसंभूतिस्तुगवान्धवं ॥ मन्त्राद्यो न मन्त्रा यस्तु
 आदिप्रतिद्वन्द्वं ॥ यस्तु न नायतलोकं सौख्यं कननय ॥ श्रीं गीतं सहाकात्यायनं सत्संगितं लिखया ॥ द
 वीलोकं सुइत्यायं यादुहित्वं दुर्तं गतं ॥ गतं गत्वा शिकं ध्यादिमामकीनं जगत्पतं ॥ दवीलोकं कनति ॥ कात्यायन
 दाहवद्वं ॥ स्वल्पसादादहं गतं जययं न वमूर्धनि ॥ अक्षकान्तं विमानं विषयं न वलि ॥ ६ ॥ गतं लभ्यते नित्यं
 दत्ताचार्यं मन्त्रान् ॥ दीनयं ॥ नायजातिपदं यादुमनूतं नयजो जयतु ॥ ७ ॥ उक्ता ॥ यस्तु गीतं ॥ यस्तु समर्थं विषयं
 सर्वमयं ॥ यस्तु वारं ॥ इति यास्य यत्कतिथी ॥ सप्तमं ॥ सप्तमं सति नाशं कर्तुं न मन्त्रं न मन्त्रं ॥ सप्तमं गतं न
 सावित्रं सक्तं न दत्तं न ॥ यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु ॥ कात्यायनं किं कृदीति ॥ गतं दत्तं यस्तु किं न गतं दत्तं यस्तु ॥ यी
 निकायनयायाश्च मूलमलं यकीरुचि ॥ ८ ॥ याजिनी कुरुवर्धुः स किं न दत्तं न ॥ गतं वरं ॥ उक्तं कात्यायनं विषयं

वलिर्नमः ॥ गतं लुहं ॥ मन्त्राणां सिद्धमन्त्रं दत्तं ॥ कल्पामन्त्रं यमयि सप्तमं नित्यं ॥ दत्तं ॥ यानि नीवी
 तादं न वलिर्नयं ॥ दत्तं ॥ यि यि पूर्ववत्तुधी सहीति ततः ॥ यनं ॥ ततः ॥ यस्तु विषयं यस्तु यस्तु यस्तु
 दयात ॥ द्वितीयकात्रं तन्मसाया नृत्तं कामक्षिनी ॥ जकिनी याचिह्ना कात्री तीजान्यथा विमादिनि ॥ दि
 नद्यमं किलियं यं वक्तुं रुहं ॥ वक्तुं यस्तु वादना यागिनी कीर्तकं ॥ हे मयं यस्तु यस्तु यस्तु
 द्वितीयकात्रं ॥ मूर्तिनि या जयतमः ॥ लाहं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ तसक्तं यस्तु यस्तु यस्तु ॥ का
 ली कताकसदृशी य नक्तं वालिचिय ॥ माया कुरु ॥ किनी वज्रं किलिगवत्यि ॥ नाम्ना यस्तु यस्तु
 यस्तु कुरुयममधिहिता ॥ रुद्रयं सन्धिहीतं रुद्रयं रुद्रयं ॥ यस्तु यस्तु यस्तु ॥ यस्तु यस्तु यस्तु
 जयत ॥ ता वयागय या कुरुयमकिनी ॥ रुद्रयं ॥ यस्तु यस्तु यस्तु ॥ यस्तु यस्तु यस्तु ॥ कुरु यिना
 कया विवका लुहं ॥ रुद्रयं ॥ यस्तु यस्तु यस्तु ॥ नक्तं यस्तु यस्तु ॥ नक्तं यस्तु यस्तु ॥ यस्तु यस्तु यस्तु

कद्रु विन विवमानं वनधिनं गुंजा नं कवसं हि ति का रु यनं जगत्सर्वं कं यता दि य वा न न हो १ वं दि तं न रु
 का ला र्था वा म वं द कि स रा ग त ॥ यू र्वा दि तं न म रु ल य रु कं की र्ति तं न दि ॥ गं ध य र्था क र्ते व दी ये ४ या या
 दि रि यं उ ॥ ग ता व र्था क र्ति तं ४ य १० त र व र्त्त नि वी द्य वे ॥ व स ता र्त्त व लु का या ४ स र ता क य सा ध क ॥ उ
 र्ते त म् य य र्त्त व र्त्त क व स र्त्त नि म व र ॥ कि र्धी म सि व स र्त्त ग र्त्त मं ग ला नि य य क व द र्त्त य द न व न को र्त्त क म
 य र्त्त रु त मा रु ग ॥ ज न न र व र्त्त मा य रु ग त न्ना र्त्त क र्त्त व र ॥ गृ द्धी या नि णि त र व र्त्त य न स र्त्त ग व र्त्त ४
 अ सि वि न स न ४ र व र्त्त ती र्त्त नो इ वा स द ॥ ग्री र्त्त र्त्त वि रु य र्त्त व र्त्त मं य ल न मा रु ग ॥ क द क ल रु म रु य
 य १० र्त्त क ल य र्त्त ॥ व द द र्त्त ज ग कि र्त्त ग कि र्त्त क र्त्त म व र ॥ का लि द्वा र्त्त व दि क र्त्त क र्त्त ग कि र्त्त द र्त्त
 रु क्ता नि र्त्त न र्त्त न य र्त्त मं स्या त र्त्त द य क द य र्त्त ॥ स र्त्त इ र्त्त म मा र्त्त म मा र्त्त म व र ॥ य र्त्त र्त्त न
 य र्त्त र्त्त कि र्त्त य र्त्त कि र्त्त ल य र्त्त ॥ कि र्त्त र्त्त य र्त्त य र्त्त मं क र्त्त व न क र्त्त ॥ रु त वी उ र्त्त य र्त्त य र्त्त कि र्त्त

21

१२

ग य म व र ॥ का लि का ये रु द रु व स र्त्त य र्त्त मं ग र्त्त ग र्त्त कि र्त्त न न य र्त्त स र्त्त रु दी य र्त्त व र्त्त य र्त्त ॥ यू र्वा दि त
 यू र्वा र्त्त गृ द्धी या इ रु र्त्त र्त्त ॥ रु नि म र्त्त मं र्त्त र्त्त रु र्त्त मं र्त्त मं य र्त्त व र्त्त ॥ स र्त्त य र्त्त र्त्त र्त्त ४ र्त्त द य
 वा ति ल य र्त्त कि र्त्त ४ स र्त्त य र्त्त य द न य र्त्त न वा र्त्त रु ल र्त्त रु र्त्त ४ र्त्त र्त्त कि र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥
 अ न्य वी उ र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ य र्त्त ली मा नि द रु कं य र्त्त ली क र्त्त य र्त्त र्त्त र्त्त ॥ ग त ४ य र्त्त र्त्त
 न ४ क र्त्त द र्त्त ४ स र्त्त र्त्त र्त्त ॥ अ र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ द र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
 त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ अ र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
 दि र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ द्वि ती य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ स
 र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ उ कि र्त्त र्त्त र्त्त
 मा य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ वि द र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त

२६